



विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध



सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा



0120-4545608 | WEBSITE: ssmnoida.in |

GMAIL: ssm.noida@gmail.com



विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा
मासिक ई-पत्रिका, जनवरी - 2026
ज्ञानोदय (अंक-63)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

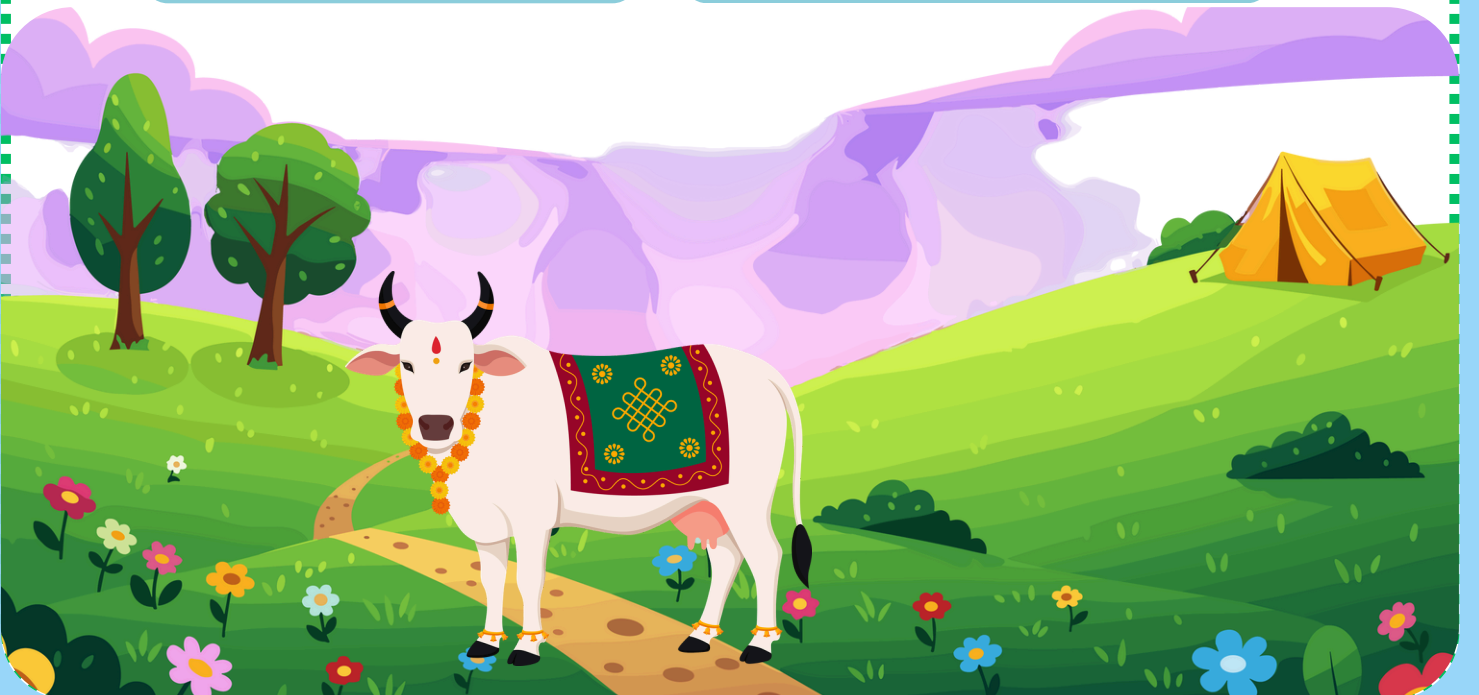


मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
श्री दीपक कुमार
श्रीमती तरुणा सक्सेना
ब०अनु सिंह
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



अनुक्रमणिका

- संत रविदास जयंती
- रामकृष्ण परमहंस जयंती
- छत्रपति शिवाजी जयंती
- प.पू. श्री गुरु जी जयंती
- विश्व मातृभाषा दिवस
- महर्षि दयानन्द जयंती
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
- स्वर्ण पप्राशन
- स्वामी विवेकांनंद जयंती
- शैक्षिक भ्रमण
- पुस्तक मेला भ्रमण
- बसंत पंचमी कार्यक्रम
- गणतंत्र दिवस
- लाला लाजपत राय जयंती
- मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम
- जन्मोत्सव हवन पूजन कार्यक्रम
- अतिथियों का विद्यालय भ्रमण
- आचार्य परिक्षण
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी





संपादकीय

मौलिक कर्तव्य



हमारे भैया- बहिनों में देश के प्रति सम्मान और अपने मौलिक अधिकार के बारे में जानकारी होनी चाहिए। भारतीय मौलिक अधिकार नागरिकों को अपने देश, समाज, संविधान, सम्प्रभुता, एकता, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज, स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान का भाव जागृत करती है, और नागरिकों के भीतर अपने देश के प्रति देशभक्ति का सृजन करती है।

मौलिक कर्तव्य देश के सभी नागरिकों को मानने चाहिए, क्योंकि हमारी पहचान हमारे देश से है। और हमारा कर्तव्य ही हमारे हमें और हमारे देश को महान बनाता है और साथ ही देश के लिए हमारे भीतर समर्पण की भावना भी उत्पन्न करता है।

मौलिक कर्तव्य समस्त नागरिकों को देश के प्रति उनकी जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक करते हैं और उन्हें उनके कर्तव्यों का स्मरण करवाते हैं। यही नागरिकों के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में काम करते हैं और उनमें **अनुशासन, भाईचारा और प्रतिबद्धता** की भावना को बढ़ाते हैं। भारत की प्रतिष्ठा की सुरक्षा को बनाये रखने के लिए राष्ट्रीय ध्वज को जलाने, सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करने आदि जैसी राष्ट्रविरोधी और असामाजिक गतिविधियों के खिलाफ चेतावनी के रूप में कार्य करते हैं।

हमे गर्व करना चाहिए कि हम भारत जैसे देश के नागरिक हैं, जहाँ कर्तव्य को श्रेष्ठ माना जाता है और गीता के श्लोकों भी हमें हमारे कर्तव्यों पर ध्यान देने की बात करते हैं जिसमें लिखा है कि 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' अर्थात् कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, अगर हम अपने कर्तव्यों को पूरा करेंगे तभी हम अपने अधिकारों को प्राप्त करने के काबिल हैं।



दीपक कुमार
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)



प्रधानाचार्य जी की कलम से



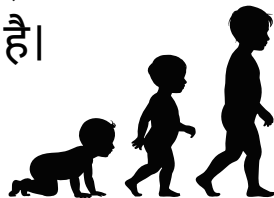
जीवन विकास के आयाम

शिक्षा जीवन विकास के लिये होती है। व्यक्ति का **शरीर** बलवान, निरामय, तितिक्षायुक्त, कुशल और सुंदर होना चाहिये। शरीर काम करने और धर्माचरण के लिये है। अतः उसे ठीक रखना जीवन विकास का प्रथम आयाम है। व्यक्ति में भरपूर प्राणशक्ति होनी चाहिये। **प्राणशक्ति** ही कार्यशक्ति है, जीवनशक्ति है। वही मनुष्य की आयु, उत्साह, विजिगीषु मनोवृत्ति, साहस, धैर्य, पराक्रम आदि का आधार है।

व्यक्ति में **मन** की एकाग्रता, शांति और अनासक्ति होनी चाहिये। मन को एकाग्रता और संयम का अभ्यास होना चाहिये। जिससे मन की शक्ति बढ़ती है। दृढ़ इच्छाशक्ति के होते कोई भी कार्य असंभव नहीं लगता। बुद्धि लौकिक ज्ञान प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ साधन है। **बुद्धि** विवेकपूर्ण व्यवहार सिखाती है। विवेक हेतु बुद्धि तेजस्वी, कुशाग्र और विशाल होनी चाहिये। बुद्धि का सामर्थ्य प्राप्त करना जीवन विकास का महत्त्वपूर्ण आयाम है। मनुष्य का **चित्त** संस्कारों का भंडार होता है। जब चित्त शुद्ध होता है तब उसे प्रेम, प्रसन्नता, निर्भयता, स्वतंत्रता आदि का अनुभव होता है जो आत्मा के गुण हैं। **चित्त की प्रसन्नता** और आत्मबोध मनुष्य जीवन का वास्तविक लक्ष्य होता है- "मैं कौन हूँ" की खोज वहाँ पूर्ण होती है।

व्यक्ति के जीवन का एक दूसरा पहलू भी है। इस सृष्टि में मनुष्य अकेला नहीं जी सकता।

सर्वप्रथम उसे मनुष्य समाज के साथ समायोजित होना है। कुटुंब, समुदाय, राष्ट्र, विश्व आदि समष्टि के सभी स्तरों पर उसे अपना दायित्व निभाना होता है। मनुष्येतर सृष्टि अर्थात् वनस्पति, प्राणी, पंचमहाभूत आदि के साथ मनुष्य को अपना संबंध सुनियोजित करना होता है। उसका विकास तब कहा जा सकता है, जब उसे सृष्टि के सर्व पदार्थ, प्राणी, वनस्पति, मनुष्य आदि परमात्मा के ही रूप हैं, ऐसी अनुभूति उसे हो। अतः अपने लिए **अहं ब्रह्मास्मि** का और सृष्टि के संबंध में '**सर्वं खलु इदं ब्रह्म**' का अनुभव जीवन विकास है।



देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

बालक के विकास में मित्रवत व्यवहार की भूमिका



मनुष्य को स्वावलम्बी बनाना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। वर्षानुवर्ष स्कूलों में, कॉलेजों में बिताकर भी हर दृष्टि से परावलम्बी जीवन जीने वाला युवक निर्माण हो तो वह शिक्षा अधूरी है। अभिभावक व अध्यापक छात्रों के लिए कुशल माली की तरह होते हैं। यदि ये दोनों छात्रों के विकास में स्नेहाशक्ति, योजनाबद्ध, सजगता, सक्रियता व सहयोगधर्मिता के साथ सकारात्मक

मार्गदर्शन करेंगे तो उनका जीवन अवश्यमेव ही व्यवस्थित फुलवारी की भांति पल्लवित व पुष्पित तथा सभी के लिए मनोहारी होगा।

रौबिला व सख्त स्वभाव न बनायें - कुछ अभिभावक स्वभाव के बड़े सख्त व रौबिले होते हैं, उनके घर में प्रवेश करते ही पूरे घर के प्रत्येक कोने में सन्नाटा छा जाता है। बच्चे, बड़े सब जहां के तहां ठिठक जाते हैं और सहम जाते हैं, ऐसा लगता है मानो सांप सूंघ गया हो। चहुँओर खामोशी छा जाती है। सारे काम निर्जीव यंत्रवत होने लगते हैं। घर हो या विद्यालय पूरे वातावरण में एक निरुल्लास परिवर्तन आ जाता है। कहने को तो आप इसे अनुशासन कहेंगे, किन्तु यह समीचीन नहीं है। इसमें आदर की अपेक्षा, भय का अंश अधिक होता है, ऐसी भयग्रस्त अनुभूति न छोटी को पसन्द होती है और न बड़ों को।

चेहरे पर मुस्कान लेकर घर में प्रवेश करें - गृहस्वामी के आने से अथवा विद्यालय प्रमुख या कक्षाध्यापक के आने से जो पूर्ण कृतज्ञता परिवार, विद्यालय, कक्षा में फैलती है या होनी चाहिए उसके स्थान पर सारे सदस्य परेशानी का अनुभव करने लगते हैं। छोटे बच्चों पर इसके विपरीत प्रभाव पड़ने से उनका मस्तिष्क दबाव अनुभव करता है। उनके सीखने-समझने की प्रक्रिया बाधित होती है। स्वभाविक विकास क्रम अस्त-व्यस्त हो जाता है। होना तो यह चाहिए कि घर पिताजी-पिताजी कहते हुए सारे बच्चे घेर लें और अपनी-अपनी कहने सुनने लगे। पिताजी बातें करते हुए, मुस्कुराते हुए, हंसते हुए घर के अन्दर पहुँच जायें। इसके विपरीत रूखे स्वभाव वाले रौबिले अभिभावक या आचार्य के प्रवेश करने पर स्वभाविक प्रतिक्रिया होगी कि अभी थोड़ी देर और न आते तो ठीक रहता।



बच्चों की रूचि-अभिरूचि पर ध्यान रखें - कुछ अभिभावक बाहर की खींझ घर पर तथा कुछ अध्यापक घर की खींझ कक्षा में बच्चों पर उतारते हैं। इसका दुष्परिणाम होता है कि कहीं न कहीं बच्चों के कोमल मन पर अपनी इच्छा प्रतिष्ठा के विपरीत अनुभव आते हैं तो भी प्रयासपूर्वक बच्चों के सामने संतुलित, सौम्य एवं सकारात्मक व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। अपने भावावेगों पर इतना नियंत्रण अवश्य होना चाहिए कि वे अनुपयुक्त देश काल परिस्थिति में प्रकट न हो पायें। अनेक अभिभावक बच्चों की रूचि को ध्यान में नहीं रखते, अपितु "मैं ही महाज्ञानी हूँ" ऐसा मानकर अपनी रूचि बच्चों पर थोपते हैं। उनकी छोटी-छोटी बातों में भी टीका टिप्पणी, संशोधन एवं ध्यान न देने के कारण बच्चे अपने को उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। जैसे-बच्चे की इच्छा है-मेरा स्कूल बैग लाल रंग का होना चाहिए, परन्तु पिताजी को नीला रंग प्रिय है तो नीला ही आयेगा। यह अनुचित है, अन्याय है। बच्चों के चेहरे पर प्रसन्नता लाने का प्रयास करें - अभिभावक को चाहिए कि वे बच्चों की रूचियों को ध्यान में रखते हुए किसी वस्तु की उपयोगिता उसे स्नेहपूर्वक समझायेंगे तो उसका भी आत्म विश्वास जागेगा। ऐसे ही अर्थात् इसी प्रक्रिया से छात्रों को अध्यापक उनकी रूचियों के अनुसार विषय की जानकारी दें। इससे छात्रों को एक बार ही प्रसन्नता होती है, जबकि वे पिछले कई दिनों से निराश रहते हैं। अतः 10 चीजें एक बार न लाकर यदि वे चार बार में लायेंगे तो बच्चों को चार दिन प्रसन्नता के बढ़ जायेंगे। पारिवारिक आनन्द वृद्धि के लिए अभिभावक को चाहिए कि वे अपने समय को इस प्रकार समायोजित करें कि प्रतिदिन बच्चों के साथ बात हो सके। उनके साथ विचार-विमर्श हो। बच्चों की रूचि एवं आवश्यकताओं की पूर्ति में उनकी भी हिस्सेदारी होनी चाहिए। यह हिस्सेदारी अवस्थानुकूल बढ़नी चाहिए। उन्हें यह नहीं लगना चाहिए कि वे छोटे हैं।

बच्चों की बातों को गम्भीरता से सुनें - अनेक बार बच्चों की ऐसी उलझने होती हैं कि जिन्हें वे अकेले नहीं सुलझा सकते। जैसे-घर में किसी भाई-बहिन का झगड़ा हो अथवा विद्यालयीन समस्या हो, उनकी बातों को गम्भीरतापूर्वक सुनना समझना चाहिए। उनका उपयुक्त हल भी निकालना चाहिए। वे अपनी पुस्तकें, कपड़े, जूते आदि नित्योपयोगी वस्तुएं जब तक व्यवस्थित न कर लें, उनका सहयोग करना चाहिए। जब तक बालक उसके योग्य न बन जायें। आयु बढ़ने के साथ-साथ उन्हें प्रेमपूर्वक स्वावलम्बी बनने के लिए प्रोत्साहित भी करना चाहिए। बड़े बच्चों को

विशिष्ट प्रकार की उलझने होती है। अतः उनको गहराई से समझने के लिए उनकी गतिविधियों, आवागमन, आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को भलीभाँति समझकर ऐसा मार्गदर्शन होना चाहिए कि उन्हें लगे ये हमारे परम हितैषी है, मित्र है न कि नियंत्रक।

बच्चे के प्रति अपना गुरुत्तर दायित्व समझें - शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक शक्तियों को परखकर उसकी प्रतिभा के अनुरूप उसका शिक्षण प्रशिक्षण करना हमारा दायित्व है। कोई उपकार या बदले की भावना से किया गया कार्य, कार्य नहीं अपितु सच्चा मित्र है। पूर्ण सहयोग एवं समर्पण में ही स्वयं आनन्दानुभूति करता है। बालक रूप कृष्ण व बालिका रूपी राधा की सेवा ही परमानन्द प्रदायिनी शक्ति है। वय के अनुकूल उनके खेल-कूद की चिन्ता और यदि दुर्भाग्यवश कोई छात्र विशेष हो तो भी उसके अन्दर कोई हीनभावना न पनपने पाये। इसका गुरुत्तर दायित्व अभिभावकों व उसके शिक्षकों का होता है। उन्हें अच्छे संस्कार मिलें, उनका जीवन श्रेष्ठ बने, इसके लिए एक अच्छे मित्र, अच्छे दोस्त की तरह अभिभावक का जीवन तदनुरूप बने यह परमावश्यक है।

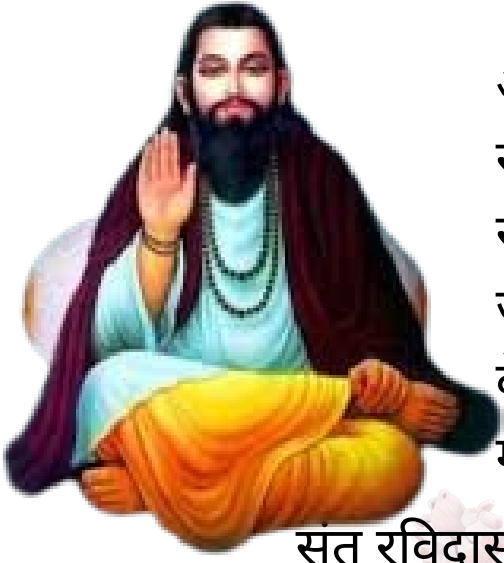
बच्चों को आदेशात्मक भाषा का प्रयोग न करें - बच्चों के साथ प्रतिपल आदेशात्मक भाषा का प्रयोग न करके एक सभ्य नागरिक के समान ही व्यवहार करने से वह भी सभ्य समाज का अंग बनेगा। हर समय आदेश व प्रताड़ना की भाषा सुनते-सुनते उसमें खिन्नता का एवं मनोमलीनता का प्रादुर्भाव होने लगता है। अभिभावक उनके शिक्षकों के प्रति शालीनता का दृष्टिकोण रखेंगे तो बच्चे भी उसके अनुरूप ही स्वतः ढल जायेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों को ऐसे व्यवहार तथा वातावरण के बीच रखा जाये कि उनमें बड़प्पन व विनम्रता दोनों का सामंजस्य हो सके। अवसर आने पर उन्हें सामाजिक, धार्मिक समारोहों में भी ले जाना चाहिए। अवकाश के दिनों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सुरम्य स्थानों पर उन्हें अपने साथ ले जाना न भूलें। बालक हर प्रकार की बात आपसे कह सकने में दोस्ती का अनुभव करे। सर्वांगीण विकास की यही सुखद प्रक्रिया है।



कमल कुमार (संयोजक)

भारतीय शिक्षा परिषद प० उ०प्र०

संत रविदास जयंती



संत रविदास जयंती भारत में श्रद्धा, आस्था और उत्साह के साथ मनाई जाती है। संत रविदास 15वीं शताब्दी के महान संत, समाज सुधारक और भक्तिकाल के प्रमुख कवि थे। उनका जन्म वाराणसी में एक साधारण परिवार में हुआ था। वे बचपन से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे और मानवता की सेवा को ही सच्ची पूजा मानते थे।

संत रविदास जी ने समाज में फैली जाति-पाति, ऊँच-नीच और भेदभाव की भावना का विरोध किया। उन्होंने समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया। उनका मानना था कि ईश्वर सबका एक है और उसकी भक्ति सच्चे मन, अच्छे कर्म और निष्कपट भावना से की जानी चाहिए। उन्होंने बाहरी आडंबरों की बजाय आंतरिक शुद्धता पर बल दिया।

उनके भजन और पद आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। उनकी वाणी में सरलता और गहन आध्यात्मिकता का सुंदर संगम देखने को मिलता है। “मन चंगा तो कठौती में गंगा” जैसी उनकी पंक्तियाँ आज भी अत्यंत लोकप्रिय हैं, जो यह सिखाती हैं कि यदि मन पवित्र हो तो हर स्थान पवित्र बन जाता है।

संत रविदास जयंती के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर भजन-कीर्तन, शोभायात्रा और सत्संग का आयोजन किया जाता है। लोग उनके जीवन और शिक्षाओं को स्मरण करते हैं तथा समाज में समानता और सद्भाव बनाए रखने का संकल्प लेते हैं।

संत रविदास जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची महानता, विनम्रता, सेवा और मानवता में निहित है। उनकी शिक्षाएँ आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक हैं और हमें प्रेम, शांति तथा समरसता के पथ पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

संजय जोशी (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



रामकृष्ण परमहंस जयंती

रामकृष्ण परमहंस जीवनी: उनका जन्म 18 फरवरी 1836 को बंगाल के हुगली जिले के कामारपुकुर गांव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम | गदाधर चट्टोपाध्याय था।

आध्यात्मिक झुकाव: बचपन से ही उनका रुझान ईश्वर भक्ति की ओर था। उन्होंने औपचारिक शिक्षा में कम रुचि दिखाई और अपना जीवन ईश्वर को समर्पित कर दिया। उनका विवाह शारदामणि देवी से हुआ जो बाद में उनकी आध्यात्मिक साथी बनी।

साधना और विश्वास: रामकृष्ण परमहंस ने देवी काली की पूजा की और विभिन्न हिन्दू परंपराओं के साथ-साथ इस्लाम और ईसाई धर्म का अभ्यास किया वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं। और ईश्वर तक पहुंचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर: वे कोलकाता के दक्षिणेश्वर काली मंदिर के पुजारी थे, जहाँ उन्होंने अपनी साधना पूरी की।

शिष्य और मिशन: उन्होंने नरेन्द्र नाथ दत्त को अपना उत्तराधिकारी बनाया जिन्होंने उनके विचारों को दुनिया भर में फैलाया रामकृष्ण परमहंस ने कोई संस्था नहीं बनाई लेकिन उनके अनुयायियों ने बाद में सष्ट रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। गले के कैंसर के कारण 16 अगस्त 1886 को उनका निधन हो गया।

प्रमुख शिक्षाएँ और संदेश: सभी धर्म समान हैं उन्होंने जोर दिया कि ईश्वर एक है और विभिन्न मार्ग केवल उन तक पहुंचने के साधन हैं। उन्होंने मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा माना। मोह माया का त्याग | वे धन और इन्द्रियों के सुख को आध्यात्मिक मार्ग में बाधा मानते थे। उन्होंने किताबी ज्ञान के बजाय ईश्वर के प्रत्यक्ष अनुभव पर जोर दिया। रामकृष्ण परमहंस का जीवन और उनकी शिक्षाएँ आज लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।



आशुतोष दुबे (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



छत्रपति शिवाजी जयंती

आर्यों का देश कहा जाने वाला हमारा भारत और हमारी संस्कृति विश्वभर में शायद किसी पहचान की मोहताज नहीं। किंतु भाग्य विडंबना देखिए! जिनके कारण हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ हम, उनका नाम या तो जानते ही नहीं या फिर जानकर भी अनजान बन जाते हैं, क्योंकि वर्तमान आधुनिक युग है इसलिए, बातें करंट वेल्यूज अर्थात वर्तमान मूल्यों की होनी चाहिए। माह फरवरी और...! यह माह अधिकांशतः आधुनिकता के साथ कदम मिलाकर चलने वालों ने प्रेम, प्रेमी, प्रेमिका और उनके लिए एक अलग दिन उससे सम्बन्धित उपहार...! सोचिए जरा...! क्या यही था उन महान विभूतियों का बलिदान के पीछे का वास्तविक हेतु.....! जिनके लिए हम दो शब्द लिखकर भी उनकी जयंती मना सकें। शायद उन्होंने सोचा न होगा कि आधुनिक सोच, सभ्यता एवं सांस्कृतिक विचारों पर भारी पड़ेगी...!

इस आर्य देश के वीर सपूतों में से एक नाम छत्रपति शिवाजी महाराज का है जिन्हें **हिन्दू हृदय सम्राट** के नाम से भी जाना जाता है। कुछ लोग इन्हें मराठा गौरव कहते हैं। सभी के अपने-अपने विचार और मत। जबकि वे भारतीय गणराज्य के महानायक थे। छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म सन् 19 फरवरी 1630 में मराठा परिवार में हुआ। कुछ लोग 1627 में उनका जन्म बताते हैं। उनका पूरा नाम शिवाजी भोंसले था। माता जीजाबाई जो, स्वयं एक धार्मिक विचारों की विदूषी महिला थी। वे धार्मिक स्वभाव वाली होते हुए भी गुण-स्वभाव और व्यवहार में वीरांगना नारी ही थीं। यही कारण था उन्होंने, बालक शिवा का पालन-पोषण रामायण, महाभारत तथा अन्य भारतीय वीरात्माओं की उज्ज्वल कहानियां सुना और शिक्षा देकर किया था। दादा कोणदेव के संरक्षण में उन्हें सभी तरह की सामयिक युद्ध आदि विधाओं में भी निपुण बनाया था। धर्म, संस्कृति और राजनीति की भी उचित शिक्षा दिलवाई थी। उस युग में परम संत रामदेव के संपर्क में आने से शिवाजी पूर्णतया राष्ट्रप्रेमी, कर्तव्यपरायण एवं कर्मठ योद्धा बन गए।

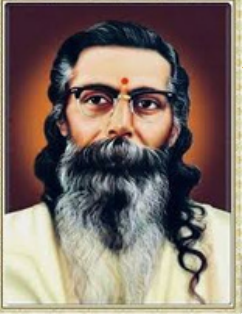
समस्त संस्कारों का बीजारोपण अपने पुत्र में मानों किसी विरासत के रूप में किया धन्य है ऐसी माता जिसने पुत्र को भारत मां को समर्पित करने हेतु योग्य बनाया।

कहा जाता है कि सब कुछ खत्म करने के लिए बाहर के विश्वासघाती की आवश्यकता नहीं होती अपने ही घर में काफी होते हैं ...! कुछ ऐसा ही वीर शिवाजी के साथ भी हुआ किन्तु अंत तक उन्होंने देश के प्रति अपने कर्तव्य को पूर्णतः निभाया। मां भगवती के उपासक, माता पिता एवं गुरु के प्रति परम आस्था और श्रद्धा रख उन्होंने अपने धर्म एवं समाज के लिए जो किया शब्दों में जितना स्पष्ट किया जाए कम है।

हमारे विद्यालय में शिवाजी महाराज की जयंती मनाई जाती है जिसके पीछे का हेतु एक शिक्षिका एवं साहित्यकारा होने के नाते हमारा नैतिक कर्तव्य बनता है अपने छात्रों को इन सभी से अवगत करवाना क्योंकि ये राष्ट्र का भविष्य हैं और इन्हें अपने देश महापुरुषों, उनके योगदान और इन सबके प्रति कर्तव्य बोध करवाना हमारा धर्म भी कर्म भी है। बन्धुओं सिर्फ शोर मचाने से जयंतियां नहीं मनाई जाती उनके विषय में जानना पड़ता कि क्यों मना रहे! आखिर क्यों याद करना उन्हें.....! क्या किया था उन्होंने.....! फिर हम स्वयं को उस स्थान पर रखकर सोचें क्या हम कर सकते थे.....??यदि उत्तर न में आए तो नमन ऐसे महान विभूतियों को कीजिएगा ऐसे राष्ट्र प्रणेता इन सच्चे महापुरुषों के प्रति यही सच्ची शुभकामनाएं होगी.....!

सीमा शर्मा तमन्ना (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा





प.पू. श्री गुरु जी जयंती



माधव सदाशिव गोलवलकर जी, जिन्हें स्नेह और सम्मान से “गुरुजी” कहा जाता है, भारतीय चिंतन और संगठन-निर्माण की परंपरा के एक प्रमुख व्यक्तित्व थे। उनका जन्म 19 फरवरी 1906 को हुआ और उन्होंने अपने जीवन को राष्ट्रसेवा, चरित्र-निर्माण और सांस्कृतिक जागरण के लिए समर्पित कर दिया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक रहे और उन्होंने संगठन को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रभक्ति को विशेष महत्व दिया गया। वे मानते थे कि किसी भी राष्ट्र की असली शक्ति उसके नागरिकों के चरित्र, एकता और सांस्कृतिक चेतना में निहित होती है।

गोलवलकर जी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल, सादगीपूर्ण और आध्यात्मिक था। उन्होंने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का त्याग कर समाज के लिए कार्य करना ही अपना जीवन-ध्येय बना लिया। उनके विचारों में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा सम्मान और राष्ट्रीय एकात्मता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

वे युवाओं को प्रेरित करते थे कि वे अपने जीवन में अनुशासन, नैतिकता और सेवा की भावना को अपनाएँ। उनके अनुसार, संगठित और जागरूक समाज ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। माधव सदाशिव गोलवलकर जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ही सच्ची राष्ट्रसेवा है। उनका त्याग, समर्पण और नेतृत्व आज भी अनेक लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

सरोज रावत (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



विश्व मातृभाषा दिवस

विश्व मातृभाषा दिवस हर वर्ष **21 फरवरी** को मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य लोगों को अपनी मातृभाषा के महत्व के बारे में जागरूक करना और सभी भाषाओं का सम्मान करना है। मातृभाषा वह भाषा होती है, जिसे हम बचपन से अपने परिवार और समाज में सीखते हैं। इसी भाषा में हम अपने विचार, भावनाएँ और संस्कृति को आसानी से व्यक्त कर पाते हैं।

विश्व मातृभाषा दिवस की शुरुआत बांग्लादेश से जुड़ी एक ऐतिहासिक घटना से हुई। वर्ष 1952 में बांग्लादेश में अपनी भाषा बांग्ला को मान्यता दिलाने के लिए छात्रों ने आंदोलन किया। इस आंदोलन में कई छात्रों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उनके बलिदान को याद करने और भाषाओं के महत्व को समझाने के लिए यूनेस्को ने 1999 में 21 फरवरी को विश्व मातृभाषा दिवस घोषित किया।

मातृभाषा में शिक्षा का बहुत महत्व है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, तो वे विषयों को जल्दी और अच्छे से समझते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखने में रुचि भी बनी रहती है। मातृभाषा बच्चों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों से जोड़े रखती है। आज के समय में लोग अंग्रेज़ी और दूसरी विदेशी भाषाओं को अधिक महत्व देने लगे हैं। विदेशी भाषाएँ सीखना अच्छा है, लेकिन अपनी मातृभाषा को भूलना ठीक नहीं है। यदि हम अपनी भाषा का उपयोग नहीं करेंगे, तो धीरे-धीरे वह भाषा समाप्त हो सकती है। भारत जैसे देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, जो हमारी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। इसलिए विश्व मातृभाषा दिवस हमें यह सिखाता है कि हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व करना चाहिए। हमें घर, स्कूल और समाज में अपनी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। मातृभाषा का सम्मान करके ही हम अपनी संस्कृति और पहचान को सुरक्षित रख सकते हैं।

आदर्श गुप्ता (शारीरिक प्रशिक्षक)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



● महर्षि दयानन्द जयंती

महर्षि दयानंद सरस्वती (1824-1883) आधुनिक भारत के एक महान समाज सुधारक, प्रखर राष्ट्रवादी और 'आर्य समाज' के संस्थापक थे। गुजरात के टंकारा में जन्मे, उनके बचपन का नाम **मूल शंकर** था।

प्रारंभिक जीवन और वैचारिक क्रांति:- चौदह वर्ष की आयु में शिवरात्रि के अवसर पर एक चूहे को मूर्ति पर चढ़ते देख उनके मन में मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न हुई, जिसने उन्हें सत्य की खोज हेतु गृहत्याग के लिए प्रेरित किया। मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानंद से वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने वेदों के शुद्धिकरण और प्रचार-प्रसार को अपना जीवन लक्ष्य बनाया।

आर्य समाज और साहित्यिक योगदान:- 10 अप्रैल 1875 को उन्होंने मुंबई में 'आर्य समाज की स्थापना की और "वेदों की ओर लौटो" का क्रांतिकारी आह्वान किया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' (1875) नामक **कालजयी ग्रंथ** की रचना की, जिसमें तर्क के आधार पर धार्मिक अंधविश्वासों का खंडन और शुद्ध वैदिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है।

सामाजिक सुधार:- स्वामी जी ने जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुरीतियों का पुरजोर विरोध किया। उन्होंने नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और समाज के सभी वर्गों के लिए वेदों के अध्ययन के अधिकार की वकालत की। उन्होंने 'शुद्धि आंदोलन' के माध्यम से उन लोगों को पुनः मूल धर्म में लौटने का मार्ग दिखाया जिन्होंने दबाव या प्रलोभन में धर्मांतरण किया था।

राष्ट्रवाद और स्वराज:- वे 'स्वराज' (1876) शब्द का प्रयोग करने वाले पहले भारतीय थे और उन्होंने "भारत भारतीयों के लिए है" का निर्भीक संदेश दिया। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में बढ़ावा दिया और राष्ट्र की आर्थिक उन्नति के लिए स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया।

शहादत और विरासत:- 30 अक्टूबर 1883 को जोधपुर में एक षडयंत्र के तहत जहर दिए जाने के कारण उनका निधन हुआ। उनके सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए स्थापित डी.ए.वी. (DAV) स्कूलों और गुरुकुलों का नेटवर्क आज भी देशभर में ज्ञान की ज्योति फैला रहा है। भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने उन्हें "आधुनिक भारत के निर्माता" की संज्ञा दी।

विधि शर्मा (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

28 फरवरी 1928 को सर चन्द्रशेखर वेंकटरमन ने अपनी महान् खोज 'रमन प्रभाव' को दुनिया के सामने रखा था। इस खोज के लिए उन्हें 1930 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। विज्ञान के प्रति रुचि और जागरूकता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (NCSTC) ने 1986 में सरकार से इस दिन को 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में घोषित करने का आग्रह किया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। इस दिन पूरे देश में विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम, प्रदर्शनी, वैज्ञानिक संगोष्ठियाँ और नवाचार प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना और लोगों को विज्ञान के महत्व से अवगत कराना रहता है।

भारत में विज्ञान का विकास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक लगातार हुआ है। आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत, नागार्जुन जैसे वैज्ञानिकों ने अपने समय में गणित, चिकित्सा, रसायन और खगोल विज्ञान में महान योगदान दिया। आधुनिक युग में सी. वी. रमन, होमी भाभा, विक्रम साराभाई, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों ने भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। विज्ञान ने कृषि, चिकित्सा, अंतरिक्ष, उद्योग और शिक्षा के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में मदद की।

डिजिटल क्रान्ति से देश में सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार हुआ। इसरो ने चन्द्रयान, मंगलयान, आदित्य एल-1 जैसी परियोजनाओं से भारत को अन्तरिक्ष अनुसंधान में अग्रणी बनाया।

'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' केवल एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह विज्ञान की शक्ति को समझने और उसे जीवन में अपनाने का अवसर प्रदान करता है।

विज्ञान और परंपरा का सही तालमेल ही भविष्य का रास्ता है।

मीनू रानी (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

स्वर्ण प्राशन



दिनांक 05/01/2026 दिन- सोमवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में भैया/बहिनों को स्वर्ण प्राशन औषधि का सेवन करवाया गया। जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने भगवान धन्वंतरि जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया। स्वर्ण प्राशन के सेवन से भैया/बहिनों का शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर होता है और वे बीमारियों से बचे रहते हैं।

स्वामी विवेकानंद जयंती



दिनांक 12/01/26 को हमारे विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में महान संत, विचारक एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी की जयंती बड़े उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद जी के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। इसके पश्चात आचार्य हरिओम जी के द्वारा उनके जीवन, आदर्शों एवं विचारों पर प्रकाश डाला गया। बालकों को बताया गया कि स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं को आत्मविश्वास, परिश्रम, अनुशासन एवं राष्ट्रसेवा का मार्ग दिखाया।

स्वामी विवेकानंद जी के अमूल्य वचन

“उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए”।

अंत में प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने सभी बालकों को स्वामी विवेकानंद जी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

शैक्षिक भ्रमण



HEIGHT AND WEIGHT CHART FOR KIDS

BOYS			GIRLS		
Age	Weight	Height (in cm)	Age	Weight	Height (in cm)
Birth	3.5	47.1	Birth	3.5	46.7
1 year	9.5	75.1	1 year	9.0	74.4
2 years	12.5	85.1	2 years	11.5	84.7
3 years	15.5	95.1	3 years	13.5	94.7
4 years	18.5	105.1	4 years	16.5	104.7
5 years	21.5	115.1	5 years	19.5	114.7
6 years	24.5	125.1	6 years	22.5	124.7
7 years	27.5	135.1	7 years	25.5	134.7
8 years	30.5	145.1	8 years	28.5	144.7
9 years	33.5	155.1	9 years	31.5	154.7
10 years	36.5	165.1	10 years	34.5	164.7





दिनांक - 13/01/26 दिन- मंगलवार को शिक्षा के स्तर को और अधिक प्रभावी, व्यवहारिक एवं प्रेरणादायक बनाने के उद्देश्य से हमारे विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका का समस्त स्टाफ का एक शैक्षिक भ्रमण ब्रह्मा देवी सरस्वती शिशु वाटिका, हापुड़ में आयोजित किया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य वहाँ की शिक्षण व्यवस्था, शैक्षिक गतिविधियों, कक्षा संचालन, संस्कार आधारित शिक्षा पद्धति तथा अनुशासन व्यवस्था का अवलोकन करना था। भ्रमण के दौरान समस्त स्टाफ सदस्यों ने वहाँ की बाल केंद्रित शिक्षण पद्धति, नवाचारपूर्ण शिक्षण तकनीकों एवं विद्यालय की व्यवस्थाओं का गहन अध्ययन किया। विशेष रूप से शिशु वाटिका में अपनाई जा रही संस्कारयुक्त शिक्षा प्रणाली ने सभी को अत्यंत प्रभावित किया। स्टाफ सदस्यों ने आपसी विचार-विमर्श के माध्यम से कई उपयोगी शैक्षिक बिंदुओं पर चर्चा की, जिससे अपने विद्यालय की कार्यप्रणाली को और अधिक सुदृढ़ बनाने की प्रेरणा मिली।

पुस्तक मेला भ्रमण



दिनांक 16/01/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा विद्यालय के आचार्यों द्वारा प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित पुस्तक मेले का शैक्षिक भ्रमण किया गया। इस भ्रमण के दौरान आचार्यों को विविध विषयों से संबंधित नवीनतम शैक्षिक साहित्य, बालोपयोगी पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, शिक्षण सहायक सामग्री एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियों की जानकारी प्राप्त हुई तथा भैया-बहिनों के लिए उपयोगी पुस्तकों के कुछ संग्रह को विद्यालय भी लाए।

बसंत पंचमी







दिनांक 23/01/2026 दिन शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में बसंत पंचमी व सुभाष चंद्र बोस जयंती कार्यक्रम का भव्य एवं गरिमामय आयोजन किया गया। बसंत पंचमी के पावन अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी, राष्ट्र स्वयं संघ, नोएडा के विभाग प्रचारक श्रीमान चिरंजीवी जी, श्री आरके शर्मा जी, श्रीमती रेनू शर्मा जी, पूर्व छात्र श्री अभिषेक जी, भैया-बहिन, अभिभावक बंधु एवं समस्त स्टाफ ने मिलकर हवन-पूजन किया। हवन के दौरान विद्या, सद्बुद्धि, अनुशासन एवं राष्ट्रहित की कामना करते हुए आहुतियाँ अर्पित की गईं। संपूर्ण वातावरण वेद मंत्रों की गूंज और हवन की सुगंध से आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण हो उठा। इस पावन अवसर पर भैया-बहनों ने पुष्प अर्पित कर माँ सरस्वती से आशीर्वाद प्राप्त किया तथा अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना की। सभी बच्चों में अत्यंत उत्साह और श्रद्धा का भाव देखने को मिला। सम्पूर्ण आयोजन अत्यंत सफल एवं प्रेरणादायक रहा।

गणतंत्र दिवस





दिनांक-26/01/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा परिसर में 77 वाँ गणतंत्र दिवस अत्यंत हर्षोल्लास, गरिमा एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमान ओ. पी. गोयल जी द्वारा ध्वज फहरा कर किया गया। ध्वज फहराते ही सम्पूर्ण वातावरण "भारत माता की जय" के गगनभेदी नारों से गूँज उठा। इसके पश्चात राष्ट्रगान का सामूहिक गायन किया गया, जिससे सभी के हृदय देशप्रेम से ओत-प्रोत हो उठे। इस पावन अवसर पर विद्यालय के भैया-बहनों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। देशभक्ति गीत, समूह नृत्य, हिंदी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषण ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रमों के माध्यम से बालकों ने स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, संविधान के महत्व तथा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान ओ.पी. गोयल जी (वरिष्ठ समाजसेवी नोएडा) को विद्यालय परिवार द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया गया। अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में मुख्य आयोजक श्री प्रताप मेहता जी (संरक्षक) ने संविधान निर्माताओं को नमन करते हुए कहा कि भारत का संविधान हमें समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार देता है। उन्होंने विद्यालय में हो रहे प्रगतिशील विकास, बालकों के अनुशासन, परिश्रम, स्वच्छता जैसे विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने भैया-बहनों का मार्गदर्शन करने के लिए आचार्यों की प्रशंसा की। साथ ही श्री राजीव नायक जी (व्यवस्थापक) ने विद्यालय में हो रहे डिजिटाइजेशन विकास के विषय में बताया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने अपने उद्बोधन से आए अतिथियों श्री प्रदीप भारद्वाज जी (अध्यक्ष), श्री जितेंद्र गौतम जी (कोषाध्यक्ष), श्री कपिल देव जी, भैया-बहनों व अभिभावक बंधुओं को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

लाला लाजपत राय जयंती



दिनांक - 28/01/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में महान स्वतंत्रता सेनानी 'पंजाब केसरी' लाला लाजपत राय जी की जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर प्रार्थना सभा में भैया-बहिनों को उनके साहस, त्याग और राष्ट्रभक्ति से अवगत कराया गया। लाला लाजपत राय जी का जीवन हम सभी को अन्याय के विरुद्ध डटकर खड़े होने और देश के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। इससे भैया- बहिनों में देशप्रेम और कर्तव्यनिष्ठा की भावना प्रबल हुई।

देश के वीर सपूत लाला लाजपत राय जी को कोटि-कोटि नमन....

मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम







दिनांक 29/01/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा परिसर में मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम अत्यंत श्रद्धा, भाव एवं संस्कारमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमान प्रदीप गुप्ता जी (संगठन मंत्री), श्री प्रदीप भारद्वाज जी (समिति अध्यक्ष) तथा प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी द्वारा मां सरस्वती के समक्ष पुष्पार्चन कर किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भैया-बहिनों में माता-पिता के प्रति सम्मान, कृतज्ञता एवं सेवा-भाव को जागृत करना था। कार्यक्रम का आरंभ वैदिक ज्योतिषविद आचार्य राघवेन्द्र मिश्र जी के मंगलाचरण एवं प्रार्थना से हुआ। तत्पश्चात भैया-बहिनों ने अपने माता-पिता का तिलक कर, पुष्प अर्पित कर एवं चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। यह भावुक क्षण सभी के मन को स्पर्श कर गया और वातावरण करुणा एवं स्नेह से परिपूर्ण हो उठा। मुख्य अतिथि श्रीमान प्रदीप गुप्ता जी ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में कहा कि माता-पिता ही हमारे प्रथम गुरु होते हैं, जिनके संस्कार जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं। उन्होंने बच्चों को आज्ञाकारी, कर्तव्यनिष्ठ एवं संस्कारवान बनने का संदेश दिया। कार्यक्रम के अंत में भैया-बहिनों ने माता-पिता की सेवा, सम्मान एवं आज्ञापालन का संकल्प लिया तथा भारत माता की आरती की गई। इस कार्यक्रम में कक्षा 3, 4 एवं 5 के लगभग 450 भैया-बहिन एवं उनके अभिभावक उपस्थित रहे। अभिभावकों ने कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। अंत में श्री प्रदीप भारद्वाज जी ने उपस्थित अभिभावक बंधुओं का आभार व्यक्त किया। यह कार्यक्रम विद्यालय की संस्कारपरक शिक्षा परंपरा का सजीव उदाहरण बनकर सभी के लिए अविस्मरणीय रहा।

जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम





दिनांक- 30/01/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा परिसर में जनवरी माह में जन्मे समस्त भैया-बहिनों के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में एक पावन हवन-पूजन कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत श्रद्धा एवं उल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य तथा सद्गुणों के विकास के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना रहा।

हवन-पूजन में आचार्या बहिन के मार्गदर्शन में विधिवत मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ संपन्न कराया गया। सभी भैया-बहिनों ने श्रद्धापूर्वक आहुति अर्पित की तथा अपने जीवन में सत्य, संस्कार, अनुशासन और सेवा भाव को अपनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी एवं आए अभिभावक बंधुओं द्वारा भैया-बहिनों को शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान किया गया।



अंग्रेजी संभाषण



दिनांक -30/01/2026 दिन- शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के वंदना सत्र में दीपक जी, धर्मेन्द्र जी व English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी व आए अतिथियों ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया तथा भैया-बहिनों से वार्ता की। विद्यालय के समस्त स्टाफ को आचार्या सीमा जी ने पी.पी.टी. के द्वारा क्रिया शोध विषय से संबंधित जानकारी दी।

ENGLISH

आचार्य प्रशिक्षण



दिनांक 31/01/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में आचार्य प्रशिक्षण योजना हेतु भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर, नोएडा से प्रशिक्षण प्रमुख श्री टीकम सिंह जी एवं श्री विकास जी ने विद्यालय के आचार्य व आचार्यों का प्रशिक्षण लिया। बैठक में उन्होंने प्रशिक्षण के विषय में वार्ता करते हुए उन्होंने भैया-बहनों की शिक्षण को रुचिकर, सरल एवं परिणामोन्मुख बनाने हेतु निम्नलिखित बिंदुओं को उजागर किया:-

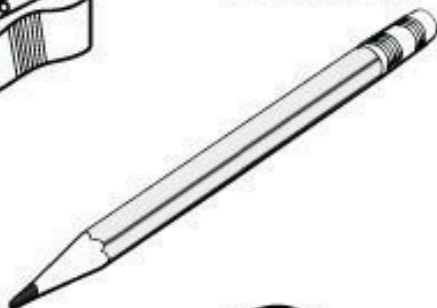
- गतिविधि आधारित शिक्षण।
 - स्लो लर्नर हेतु विशेष शिक्षण पद्धति का प्रयोग।
 - सरल शिक्षण-सामग्री का प्रयोग।
 - भैया-बहनों के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं नैतिक मूल्यों का विकास।
- आभार व्यक्त किया।



बताओ तो जाने



Back to School



6 Down



6 Across



10

11

ACROSS

2. "I _____ 2nd grade, so now I am in 3rd grade."
"I _____ my math test."
4. another word for test, but usually more formal and often longer than a regular test, often at the end of a year, and usually is a fairly big part of your final end of year grade
8. an amount of teaching given at one time
Today's math _____ is on fractions.
9. a short test that is sometimes a surprise
10. past tense of teach
11. 3rd

DOWN

1. a level of study that is completed by a student during a year;
"I am in 3rd _____."
3. a group of students who meet regularly to be taught a subject or activity;
"There are 26 kids in my _____."
5. a number or letter that indicates how a student did in a subject or on a test
"I got a good _____ on my spelling test."
7. a person who teaches



पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1. मौलिक कर्तव्य देश के नागरिकों में किस भावना को बढ़ाती है?
2. मनुष्य जीवन का वास्तविक लक्ष्य क्या होता है?
3. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए?
4. बच्चों के प्रति गुरुत्तर दायित्व क्या होता है ?
5. संत रविदास जी की लोकप्रिय पंक्ति का अर्थ क्या है?
6. रामकृष्ण परमहंस जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
7. छत्रपति शिवाजी महाराज को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
8. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक कौन थे?
9. विश्व मातृभाषा दिवस कब मनाया जाता है?
10. संत रविदास जी की लोकप्रिय पंक्ति कौन- सी है?
11. महर्षि दयानंद जी के बचपन का नाम क्या था?
12. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उद्देश्य क्या था?
13. मातृ पितृ पूजन कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है?
14. इस वर्ष 2026 में गणतंत्र दिवस की कौन-सी वर्षगांठ मनाई गई?
15. महर्षि दयानंद जी ने किस ग्रंथ की रचना की थी?



आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे ।

कक्षा- तृतीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को
ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 35 व 36 में दिए प्रश्नों के उत्तर
कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 25 फरवरी 2026
तक भेजने होंगे।